डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

(प्रेस विज्ञप्ति)

"कलमकार का मूल काम मानवता का संरक्षण और उसका प्रसार है": शमीम तारिक़

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग में साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के सहयोग से दो दिवसीय साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सबसे पहले दिनांक 18 जुलाई 2025 को अपराह्न 2.00 बजे **'लेखक से भेंट'** कार्यक्रम के अंतर्गत उर्दू के प्रसिद्ध लेखक, कवि और चिंतक शमीम तारिक़ ने अपने व्यक्तित्व और रचनात्मक यात्रा पर विस्तार से प्रकाश डाला। उनसे पहले साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने इस कार्यक्रम का परिचय दिया। उन्होंने कहा कि 'लेखक से भेंट' साहित्य अकादेमी का सबसे प्रतिष्ठित कार्यक्रम है, जिसमें अपने समय के प्रमुख लेखक, साहित्यकार और कलमकार शामिल होते रहे हैं और उनके अनुभवों से श्रोता लाभान्वित होते रहे हैं। शमीम तारिक़ कवि, लेखक, पत्रकार, स्तंभकार और विद्वान हैं। वे बनारस के रहने वाले हैं और उन्होंने बीएचयू से शिक्षा प्राप्त की है।

शमीम तारिक़ ने बेहद भावुक अंदाज़ में बीएचयू के छात्र जीवन का ज़िक्र किया और अपने शिक्षकों को याद करते हुए अतीत की स्मृतियों में चले गए। उन्होंने बताया कि उनकी 24 किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं और दो पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं। जोय अंसारी पर हिंदी में एक विनिबंध साहित्य अकादेमी से प्रकाशनाधीन है। अपने वक्तव्य में उन्होंने बनारस की गंगा-जमुनी तहज़ीब (हिंदू-मुस्लिम साझा संस्कृति) का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि छात्र जीवन में यदि कठिनाइयाँ आएँ तो घबराने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यही कठिनाइयाँ ऊँचाइयों तक पहुँचाने का ज़रिया बनती हैं। उन्होंने कहा: "मैंने अपनी ज़िंदगी में कभी किसी की बुराई नहीं की, किसी को नुक़सान नहीं पहुँचाया, सभी से मोहब्बत की और मोहब्बत ही मेरा पैग़ाम है। मैंने बहुत मेहनत की है और यही संदेश नई पीढ़ी को देना चाहता हूँ।" उन्होंने अपनी सभी प्रकाशित पुस्तकों के बारे में विस्तार से बात की और श्रोताओं के प्रश्नों का उत्तर भी दिया। कार्यक्रम का संचालन उर्दू विभाग के एसोशियेट प्रोफ़ेसर डॉ. मुशर्रफ़ अली ने किया।

शमीम तारिक़ के साथ **'लेखक से भेंट'** कार्यक्रम के बाद **'साहित्य मंच'** कार्यक्रम के अंतर्गत मुशायरे का आयोजन हुआ। इसकी अध्यक्षता प्रसिद्ध शायर चंद्रभान ख़याल ने की। जिन शायरों ने अपना कलाम पेश किया उनमें शमीम तारिक़, शहाबुद्दीन साकिब, पंकज के. सिंह, निज़ाम बनारसी, ज़िया एहसनी, अजय मालवीय 'बहार इलाहाबादी', अहमद आज़मी, शमीम ग़ाज़ीपुरी, समर ग़ाज़ीपुरी और नूर फ़ातिमा शामिल थे। उनकी शायरी ने सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। मुशायरे का संचालन समर ग़ाज़ीपुरी ने किया।

(जारी...)

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली-110 001, दूरभाष : +91-11-2338 7064, 2307 3002, फैक्स : +91-11-2338 2428
Rabindra Bhavan, 35 Ferozeshah Road, New Delhi-110 001, Phone: +91-11-2338 7064, 2307 3002, Fax +91-11-2338 2428
E-mail: secretary@sahitya-akademi.gov.in, Website: http//www.sahitya-akademi.gov.in

"काशी भारत की गंगा-जमुनी तहज़ीब का प्रतिनिधि चेहरा है" : चंद्रभान ख़याल

"मैं उर्दू और हिंदी की कृत्रिम प्रतिस्पर्धा का सख्त मुख़ालिफ़ हूँ" : जानकी प्रसाद शर्मा

काशी हिंदू विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग और साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में 'उर्दू शेर-ओ-अदब में बनारस' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन दिनांक 19 जुलाई 2025 को किया गया। इस परिसंवाद में मुख्य अतिथि के रूप में उर्दू प्रख्यात शायर तथा साहित्य अकादेमी के उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक चंद्रभान ख़याल शामिल हुए। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता उर्दू विभागाध्यक्ष आफ़ताब अहमद आफ़ाक़ी ने की। उद्घाटन सत्र में बीज वक्तव्य श्री जानकी प्रसाद शर्मा ने दिया।

चंद्रभान ख़याल ने परिसंवाद का उद्घाटन करते हुए कहा कि काशी या बनारस भारत के विविधता में एकता का प्रतिनिधि रूप है। उन्होंने कहा कि मिर्ज़ा ग़ालिब ने अपनी फ़ारसी मसनवी 'चिराग़-ए-दैर' में बनारस की जम कर तारीफ़ की है। यह मसनवी उनके बनारस प्रवास के दौरान लिखी गई थी, जिसमें उन्होंने शहर के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक वैभव को 108 शेरों में उकेरा। ग़ालिब ने बनारस को एक रंगीन और जीवंत शहर के रूप में देखा, जिसमें गंगा और मंदिरों का विशेष ज़िक्र है: *"ब-ख़ातिर दाराम ईनक दिल ज़मीने बहार आईं/ सवाद ए दिल नशीने"* (अर्थात, बनारस की ख़ूबसूरती दिल को बसंत की तरह सुकून देती है।) उर्दू शायरी में बनारस (काशी) को उसकी आध्यात्मिकता, गंगा के घाटों, सांस्कृतिक समृद्धि और प्राचीन सौंदर्य के लिए खूब उकेरा गया है। बनारस को अक्सर मोक्ष, प्रेम, और जीवन-मृत्यु के दर्शन के प्रतीक के रूप में चित्रित किया जाता है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित प्रख्यात लेखक शमीम तारिक़ ने उर्दू साहित्य में काशी के वर्णन पर संक्षेप में प्रकाश डाला। उन्होंने वली दकनी, नज़ीर बनारसी, ग़ालिब आदि के काव्यांशों का हवाला दिया। उन्होंने बताया कि ग़ालिब ने अपनी कविता 'चराग़-ए-दैर' में बनारस का बहुत सुंदर चित्र खींचा है। इसके अतिरिक्त हिदायतुल्लाह हिदायत, फ़िराक़, अख़्तर शिराज़ी, मीराजी, शेर अली अफ़सोस जैसे कई रचनाकारों ने भी बनारस को अपने साहित्य में जगह दी है। उन्होंने बताया कि बनारसी शब्दों जैसे बनारसी घाट, बनारसी साड़ी, बनारसी पान, बनारसी चाट आदि का उल्लेख उर्दू और हिंदी कविता में ख़ूब हुआ है – यह एक साहित्यिक संपदा है।

जानकी प्रसाद शर्मा ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि बनारस को कई दृष्टिकोणों से समझा जा सकता है, विशेषकर इसकी वैश्विक सांस्कृतिक पहचान के आधार पर। उन्होंने कहा कि शहरों के मिटने का संकट आज एक राष्ट्रव्यापी घटना बन गया है। क़स्बों से क़स्बा, शहरों से शहर ग़ायब होता जा रहा है। इसी प्रकार, साहित्य में बनारस का जो उल्लेख मिलता था, वह

(जारी...)

भी कम होता जा रहा है। उन्होंने ज़ोर देकर कहा कि मैं उर्दू और हिंदी की कृत्रिम प्रतिस्पर्धा का सख्त मुख़ालिफ़ हूँ। मुझे उस बनारस की तलाश है, जिसका वर्णन साहित्य में मिलता है। उन्होंने कहा कि हक़ीक़त यह है कि यह शहर आधा है और आधा नहीं है, इसलिए हमें पूरे बनारस को तलाशने की ज़रूरत है।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में आफ़ताब अहमद आफ़ाक़ी ने कहा कि उर्दू के शायरों और लेखकों ने बनारस के महत्त्व पर विशेष ध्यान दिया है।

साहित्य अकादेमी के हिंदी संपादक अनुपम तिवारी ने इस अवसर पर स्वागत वक्तव्य में कहा कि काशी के महात्म्य का साहित्य में बड़ा उल्लेख मिलता है। उन्होंने पौराणिक ग्रंथों, स्मृतियों, संस्कृत साहित्य के साथ ही समकालीन हिंदी और उर्दू साहित्य में बनारस (काशी) के उल्लेखों का परिचय दिया। उद्घाटन सत्र का कुशल संचालन विभाग के ही डॉ. मुशर्रफ़ अली ने किया।

उद्घाटन सत्र के बाद रईस अहमद और शहाबुद्दीन साक़िब की अध्यक्षता में क्रमशः दो विचार सत्र आयोजित किए गए, जिसमें मो. लईक़ अहमद, शम्स अज़ीज़, रज़ी उर रहमान, अजय मालवीय और मो. ताहिर ने अपने सुचिंतित आलेख प्रस्तुत किए। इस अवसर पर बीएचयू के विभिन्न विभागों के छात्र, शिक्षक, साथ ही बनारस और आसपास के इलाकों से बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम धन्यवाद ज्ञापन के साथ सम्पन्न हुआ।

(के. श्रीनिवासराव)